सहज योग ही प्रेमयोग

राजयोगी ब्र.कु. सूर्य,माउण्ट आबू

बाबा ने आकर हमें सहज योग सिखाया है। इस सहज योग को एक दूसरा नाम भी दिया जा सकता है और वह है `प्रेमयोग'। हमारा बाबा से बहुत प्यार है क्योंकि वह हमारा अपना है। बाबा ने आकर हमें यह एहसास दिलाया, ``हे बच्चे! मुझे तुम पुकार रहे थे, भक्ति कर रहे थे, याचना कर रहे थे, मांग रहे थे। अपने को दास, पापी, कपटी कह रहे थे। मुझे न जाने क्या-क्या सोच रहे थे। लेकिन मैं तो तुम्हारा पिता हूँ। मैं तुम्हें बहुत प्यार करता हूँ। मुझे यह बिल्कुल अच्छा नहीं लगता कि तुम हाथ फैलाओ... कभी शांति के लिए, कभी सुख के लिए, कभी विघ्न विनाश के लिए, कभी समस्याओं के निवारण के लिए। जो कुछ

मेरा है वह सबकुछ तुम्हारा है...!''

तो आज सारा दिन हम याद करेंगे, ``भगवान तो मेरा है... उसका सबकुछ भी मेरा है... वह हज़ार भुजाओं सहित सदा ही मुझे मदद देने के लिए तैयार है..! और जब भी मैं उसको बुलाऊंगा/बुलाऊंगी वह तुरंत दौड़ा चला आयेगा। सोचो, भगवान मेरा है..! किसी बड़े आदमी से हमारा नाता जुड़ जाये... प्राईम मिनिस्टर हमें कह दे कि मैं तुम्हारा हूँ, तुम्हारा संबंधी हूँ, तुम्हारा अपना हूँ, जब भी तुम्हें ज़रूरत पड़े तो मुझे याद कर लेना... तो कितना नशा चढ़ जायेगा..! कितना हम उसका लाभ उठायेंगे, कैसे हमारा जीवन निश्चिंत हो जायेगा। बाबा भी हमें रोज़-रोज़ याद दिलाते हैं– ``बच्चे, मैं तुम्हारा हूँ..!'' कितना नज़दीक संबंध है। कहां भगवान और भक्त और कहां हम उसके और वह हमारा..! उसका सबकुछ हमारा। साथ में हम भी कह दें, मेरा सबकुछ तुम्हारा..! हमारे पास तो है भी क्या देने को और उसके पास तो अथाह खज़ाने हैं। हम थोड़ा सा कुछ देकर उससे अनंत खज़ाने प्राप्त कर लेते हैं। तो हम उसके प्यार में मग्न हो जायें क्योंकि प्यार भी उससे ही होता है जो अपना होता है। परायों से कभी प्यार नहीं हुआ करता। चाहे हम किसी से भी दोस्ती करें उसमें अपनापन आ जाता है तो बहुत प्यार रहता है, और अगर उसमें स्वार्थ रहता है तो सच्चा प्यार नहीं रहता है।

तो बाबा ने आकर हमें बहुत अपनापन दिया है। हम भी बाबा को अपना समझें। जब हम उसकी ओर देखें तो इस नज़र से न देखें कि वह भगवान हैं, बहुत दूर हैं..! डरते हैं लोग भगवान से, बड़ा खतरनाक होगा, पता नहीं क्या कर देगा, सज़ा देगा..! नहीं..! वह तो बहुत प्यारा है, उस जैसा प्यारा तो कोई होता ही नहीं..! बाबा कहा करते हैं, ``मैं तो मीठे (स्वीट) का पहाड़ हूँ। सबको प्यार देनेवाला, सबसे मीठा बर्ताव करने वाला..!'' तो हम सभी एक चीज़ पर बहुत ध्यान देंगे, उससे नाता जोड़े रखें... यह योग की बहुत सहज विधि है और उसके प्यार में हम मग्न भी हो जायें। विचार किया करें, वह हमारा है...वह हमें कितना प्यार करता है... उसने हमारे लिए क्या-क्या किया है। जैसे लौकिक में एक बाप, माँ अपने बच्चों के लिए बहुत कुछ करते रहते हैं, पर बच्चों को इसका आभास होता ही नहीं। वह कह देते हैं कि तुमने हमारे लिए क्या किया..! लेकिन माँ-बाप जीवन लगा देते हैं। हमारे मात-पिता भी हमारे लिए बहुत कुछ कर रहे हैं। उसको ज़रा हम अनुभव करें कहाँ-कहाँ वह हमारी मदद कर रहा है, कहाँ-कहाँ वह हमें बचाता है।

तो चलें आज सारा दिन हम उसके प्यार में मग्न रहें। उसको प्यार में जो हमारा अपना है... उसके प्यार में जो हमें बहुत प्यार करता है। उसके प्यार में जो हमें सर्वस्व देने आया है..! और बस उसके उपकारों को याद करें। न जाने कहाँ-कहाँ उसने हमें जीवनदान दिया होगा, कहाँ-कहाँ हमारी छत्रछाया बनकर वह रहता होगा। हमें इसका बिल्कुल आभास नहीं होता क्योंकि यह बातें बहुत सूक्ष्म हैं..!

तो आज सारा दिन यह अभ्यास करेंगे - ``बाबा हमारी छत्रछाया है और हमारा है।'' बाबा का आह्वान भी किया करेंगे और बार-बार यह फीलिंग अपने मन में दोहरायेंगे, ``वह तो मेरा है..!''

उन्होंने कहा 'मैं तुम्हारा हूँ', ये कितना सुंदर लम्हा है! और इतना ही नहीं बल्कि यह भी कहा 'मेरा सबकुछ तुम्हारा है'। तो सोचो ज़रा- वो हमें कितना प्यार करता है! हम कैसे थे, फिर भी कहा तुम जो हो जैसे हो, मेरे हो। बार-बार याद दिलाया, तुम तो वो महान आत्मा हो जिसके बिना संसार चल नहीं सकता। तुम्हारे संकल्पों से दुनिया चलती है। तो उठो अपने से खूब प्यार करो और प्यार के सागर में गोते लगाओ।

नोएडा। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर विशाल जन समूह को राजयोग मेडिटेशन कराते हुए ब्र.कु. शील व अन्य राजयोगी शिक्षिकाएं।

ओ.आर.सी.-गुड़गांव। 'लीडिंग फ्रॉम हार्ट' विषय पर आयोजित कार्यक्रम में सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. आशा। कार्यक्रम में शरीक हुए एस.बी.आई. के मुख्य प्रबंधक आश्विन मेहता, एस.बी.आई. के उप प्रबंध निदेशक मुरली जी, फिल्म निर्माता रामकृष्ण गौड़ व अन्य गणमान्य जन।

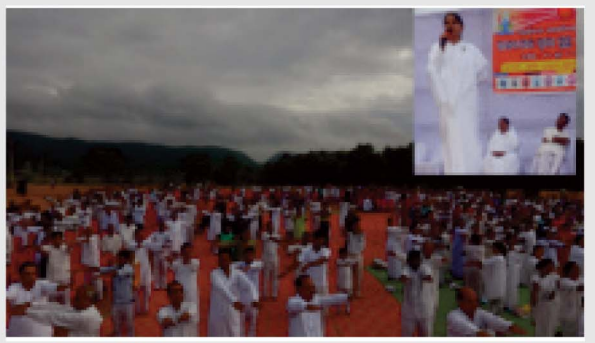

राउरकेला-ओडिशा। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में योगाभ्यास कराते हुए ब्र.कु. श्वेता। मंचासीन हैं शारदा नायक,चेयरमैन, आर.डी.ए. व ब्र.कु. विमला। सभा में योगाभ्यास करते भाई बहनें।

देवघर-झारखण्ड। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर आयोजित 'राजयोग द्वारा स्वस्थ एवं सुखी जीवन' कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए पण्डित डॉ. मोहनानंद मिश्र,सेवानिवृत्त प्राचार्य,संस्कृत महाविद्यालय, डॉ. दिवाकर कामत, विष्णु भट्टाचार्या,मुख्य प्रबंधक,यूको बैंक व ब्र.कु. रीता।

राँची। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर आयोजित 'राजयोग द्वारा स्वस्थ एवं सुखी जीवन' कार्यक्रम में भाई बहनों को योगानुभूति कराते हुए ब्र.कु. निर्मला।

रुड़की। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर आयोजित 'राजयोग द्वारा स्वस्थ एवं सुखी जीवन' कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए डॉ. सज्जान,प्रो. सर्जरी विभाग,हिमालयन अस्पताल, मनोज नोटियाल,उपाध्यक्ष,ऊर्जा संवर्धन एवं विकास सिमिति, जगदीश प्रसाद चमोला,भानियावाला पिन्सीपल, सागर मनवाल,ग्राम प्रधान, ब्र.कु. भानू, ब्र.कु. सोनिया व अन्य।

मीडिया महासम्मेलन

ब्रह्माकुमारीज़ के मीडिया प्रभाग द्वारा शांतिवन परिसर में 11 से 15 सितम्बर तक `स्वस्थ एवं सुखी समाज के लिए मूल्यनिष्ठ मीडिया' विषय पर मीडिया महासम्मेलन का आयोजन किया गया है जिसमें 2000 मीडियाकर्मी भाग लेंगे। इस महासम्मेलन में प्रिन्ट, इलेक्ट्रॉनिक्स तथा साइबर मीडिया आदि से जुड़े मीडियाकर्मी भाग ले सकते हैं। अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें :-

ब्र.कु. शान्तनु, मुख्यालय संयोजक,मीडिया प्रभाग
मो.- 9414156615 / 9928756615
ई.मेल - mediawing@bkivv.org

ज़रूरी सूचना

Connectone software के लिए चार software developers की आवश्यकता है, जो 2 वर्ष से बी.के. हों और 6 मास या अधिक शांतिवन, आबू रोड में रह सकते हों।
सम्पर्क करें -
ब्र.कु. ललित
मो. - 9413373440,
ई.मेल:-
trimurtishiva@gmail.com

ओमशान्ति मीडिया में दो जर्नलिस्ट सेवाधारियों की आवश्यकता है, जिनका कम से कम दो वर्ष से इस कार्यक्षेत्र का अनुभव हो और साथ साथ बी.के. हों, वे सेवा के लिए सम्पर्क करें- ओमशान्ति मीडिया
मो. - 8107119445
ई.मेल:-
mediabkm@gmail.com

मॉस्को। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर आयोजित 'इज़ी राजयोगा' विषयक कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए पी.एस. राघवन,एम्बेसेडर ऑफ इंडिया टू रशियन फेडरेशन। इस अवसर पर उपस्थित रहे राहुल श्रीवास्तव,काउंस्लर,इनफॉरमेशन एंड कल्चर विंग,इंडियन एम्बेसी, आशीष शर्मा,डायरेक्टर ऑफ द जवाहर लाल नेहरू कल्चरल सेंटर,इंडियन एम्बेसी, ब्र.कु. सुधा व अन्य।

मलेशिया-कुआला लंपुर। मिनिस्ट्री ऑफ यूथ एंड स्पोर्ट्स द्वारा इंटरनेशनल यूथ सेंटर में 'वर्ल्ड इन ट्रांज़ीशन-न्यू थिंकिंग क्रियेट्स न्यू रियालिटीज़' विषयक कार्यक्रम में सम्बोधित करने के बाद समूह चित्र में ब्र.कु.जयन्ती, ब्र.कु.मीरा व अन्य यूथ लीडर्स।